IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अमरकांत के उपन्यासों में भारतीय परिवार का स्वरुप

शोधार्थिनी - पूजा वर्मा

शोध केंद्र - किशोरी रमण पी.जी. महाविद्यालय, मथुरा

शोध निर्देशिका - डॉ० कामना पण्ड्या

एकल एवं संयुक्त परिवार

वर्तमान समय में मनुष्य की पहली प्राथमिकता उसका परिवार है। एक बालक के रूप में उसका प्रथम सामाजिक प्रवेश उसके परिवार में ही होता है।. परिवार में जहाँ एक बालक को सुरक्षा, अपनापन व अपनी संस्कृति को समझने का अवसर प्राप्त होता है वहीं जीवन का उद्देश्य तथा दुनिया को देखने का नजरिया भी प्राप्त होता है।

अमरकांत जी के उपन्यासों में मूलत: निम्न व मध्यमवर्ग के परिवारों की सच्चाई को उजागर किया गया है। अमरकांत जी अपने उपन्यासों में मध्यम वर्ग के परिवारों में किस प्रकार के संबंध तथा रिश्तों का तानाबाना होता है उसे पूरी सत्यता के साथ वर्णित किया गया

'काले उजले दिन' उपन्यास के अंतर्गत अमरकांत जी ने एक ऐसे एकल परिवार के कथानक को दर्शाया है जहाँ एक छोटा-मासूम बालक अपन माता-पिता के साथ अठखेलियाँ करता हुआ जीवन बिताता है। परन्तु जब वह बालक पाँच वर्ष में प्रवेश करता है तब उसके जीवन की दिशा ही बदल जाती है।

''वे दिन कितने काले थे ? आज भी जब उन दिनों की याद आती है तो कलेजा मुँह को आता है। किसी एकांत कोने बैठकर मैं आँसू बहाया करता। मेरे पिताजी शहर के मशहूर वकील थे, शान- शौकत से रहते थे। मेरी माँ बहुत खूबसूरत थीं, मैं एकलौता बेटा था. इसलिए मेरा लालन-पालन बड़े प्यार से हुआ। हम सभी आपस में बहुत खुशी से रहते थे पर जब मैं पाँच वर्ष का था तो मेरी माँ की मृत्यु हो गई और जल्दी ही उनकी जगह दूसरी माँ आ गईं।

अमरकांत जी के उपन्यास 'सुखजीवी' में भी एकल परिवार की समस्याओं को पाठकों तक पहुंचाया है।

'सुखजीवी' में नायक दीपक एकल परिवार होने के कारण स्वयं के सुख, स्वार्थ तथा स्वतंत्रता का अनावश्यक रूप से उपयोग कर अपनी मानसिक विकृतियों का आनंद उठाता है जिसका खामियाजा उसकी पत्नी अहल्या को उठाना पड़ता है। मनमुताबिक पत्नी न पाकर वह अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति बाहर से करता है। पत्नी की उपेक्षा कर बाहरी स्त्रियों से संबंध रखता है तथा अपने एकल परिवार की जड़ो तथा अपनी शादी को स्वयं खोखला करता है।

'बीच की दीवार' उपन्यास में एकल परिवार में जन्मी कन्या दीप्ति की कहानी है। यहाँ संयुक्त परिवार का प्रत्येक सदस्य स्वयं से पहले अपने परिवार के बारे में सोचता है, सभी का आदर करता है सब की भावनाओं का ख्याल रखता है वहीं एकल परिवार में ये सभी संस्कार नदारद रहते हैं तथा प्रत्येक सदस्य स्वयं की इच्छा-आकांक्षा का ध्यान रखता है और अपनी स्वतंत्रता से समझौता नहीं करता। बीच की दीवार' उपन्यास भी एक ऐसे ही एकल परिवार के कथानक को वर्णित करता है।–

'' मुंशी मुन्नीलाल, शादी से पूर्व उनकी बड़ी तमन्ना थी कि उनकी पत्नी पढ़ी-लिखी और खूबसूरत मिले पर वह आकांक्षा पूरी न हुई। वह बहुत दिनों तक अपनी पत्नी से मुँह फुलाए रहे। बासन्ती अपनी किस्मत को रोती रहती। लेकिन यह स्थिति आखिर कब तक चलती ? या तो वह अपनी पत्नी को छोड़कर दूसरा विवाह कर लेते या स्थिति से समझौता कर कोई कामचलाऊ रास्ता निकाल लेते। उन्होंने

दूसरा मार्ग श्रेयस्कर समझा और अपनी निराशा की क्षतिपूर्ति उन्होंने दूसरे ही ढंग से शुरु कर दी। वह अपने दुख को शराब- कबाब, संगीत और वेश्याओं की गोद में भूलने की चेष्टा करने लगे। प्रथम बालक शंकर के जन्म पर मुंशी दुखी हुए क्योंकि वह अपनी मॉ बासन्ती की तरह ही काला था। दूसरी सन्तान दीप्ति के जन्म पर उनके मन में उजाला छा गया क्योंकि वह बहुत गोरी व सुंदर थी। लेकिन असाधारण प्यार के कारण दीप्ति तुनकमिजाज़, जिद्दी, घमंडी, फैशन परस्त व पढ़ने में फिड्डुडी थी। बासन्ती जानती थी कि उसकी बदसूरती की क्षतिपूर्ति वह अपनी बच्ची के प्यार से करते थे। इसी वजह से वह अपने लड़के से प्यार नहीं करते थे क्योंकि वह अपनी माँ की तरह ही काला और बदसूरत था।"2

'सुन्नर पांडे की पतोह' उपन्यास में अमरकांत जी ने संयुक्त परिवार में बदलते हुए रिश्तों की सत्यता को वर्णित किया है। पचकौड़ी तिवारी वैध के यहाँ एक पुत्री का जन्म हुआ जिसका नाम राजलक्ष्मी रखा गया, अन्य सन्तानों के जीवित न रहने के कारण राजलक्ष्मी एकमात्र सतान थी, जिसका पालन-पोषन बहुत लाड़-प्यार से किया गया था। राजलक्ष्मी का विवाह सुन्नर पांडे के छोटे सुपुत्र झुल्लन पांडे से तय हुआ जिस कारण राजलक्ष्मी का नाम आगे चलकर सुन्नरपांडे की पतोह पड़ गया परन्तु उसके जीवन में बदलाव तो अभी शुरू ही हुआ था -

" राजलक्ष्मी तथा झुल्लन पांडे की दो सन्तानें हुईं, दोनों कुछ बड़े हुए फिर मर गए झुल्लन की माँ अतिराजी स्वयं झाड़-फूंक के चक्कर में उनको लेकर भागती रही इसी चक्कर में दोनों बच्चे मर गए। झुल्लन अपनी माँ की हरकतों से परेशान होकर एकदिन घर से चुपके से निकल गए और फिर कभी वापस नहीं लौटे "| 3

झुल्लन के जाने के बाद उसकी माँ अतिराजी अपने पति को उकसाती और राजलक्ष्मी के पास भेजने का प्रस्ताव देती।

"अरे जाइए न आप भी बहती गंगा में हाथ धो आइए |"4

'आकाश पक्षी' उपन्यास में अमरकांत जी ने संयुक्त राज परिवार की सामंती व्यवस्था को दर्शाया है। उपन्यास की नायिका हेमवती राजघराने से है उसके पिता को सभी 'बड़े सरकार' बुलाते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् राजघरानों की सत्ता खत्म होने के बाद बड़े सरकार को मात्र दस हजार रुपये देकर स्वयं अपने परिवार के साथ दिल्ली जाकर बस जाते हैं। इस कठिन घड़ी में अपने परिवार को संभालते हैं तथा अपने छोटे भाई व उसके परिवार को अकेला छोड़ देते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अमरकांत जी ने समाज की पहली इकाई अर्थात परिवार का वर्णन बहुत ही गहराई से किया है। अमरकांत जी के उपन्यासों में निम्न वर्ग के परिवारों के जीवन की सत्यता का बोध कराया जाता है। चाहे वह एकल परिवार हो या फिर संयुक्त परिवार । दोनों ही स्थिति में परिवार के प्रत्येक सदस्य की मानसिकता को दर्शाने का प्रयास अमरकांत जी ने बेहद निष्ठा से किया है। ईर्ष्या, द्वेष कुंठा धोखे जैसी सभी भावनाओं अमरकांत जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया है पाठक वर्ग आपके उपन्यासों में स्वयं के जीवन या अपने आस-पास के परिवारों के जीवन की झलक को देखकर जुड़ाव मह सूस कर सकता है। इसी कारण अमरकांत जी को मध्यम वर्ग का लेखक भी कहा जाता है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अमरकांत जी के उपन्यासो में एकल तथा संयुक्त दोनों ही परिवारों के कथानक को दर्शाया है। तथा हम देखते हैं कि एकल परिवार होने के कुछ लाभ हैं तो कुछ हानियाँ भी हैं।

पारिवारिक समस्याएँ

अमरकांत जी के उपन्यासों में मुख्यतः निम्न व मध्यम वर्ग की स्थिति को पाठकों के समक्ष रखा गया है। निम्न व मध्यम वर्ग की आम जिंदगी की उठा-पटक को बखूबी दर्शाया गया है।

'ग्रामसेविका' उपन्यास एक कर्मठ तथा संघर्षशील नारी दमयन्ती की गाथा है जो अपने परिवार की जिम्मेदारियों को निभाने के लिए विशुनपुर नामक गाँव की ग्रामसेविका बनती है। विशुनपुर में जाकर उसे ज्ञात होता है कि अज्ञानता के कारण गाँव के लोग रुढ़िवादी तया अन्धविश्वासी है और पढ़ाई लिखाई से दूर भागते है। उसी गाँव में रमैनी सहुआइन नामक वृद्ध स्त्री रहती है जिसकी बहू जमुना बहुत सीधी है और रमैनी अपनी बहू को बहुत बंदिश में रखती है। जमुना अपनी सास की आज्ञा के बिना कोई काम नहीं कर सकती थी एक दिन उसने अपने बेटे हरिया को स्कूल भेजने की बात करनी चाही -

"अम्मा जी, " हरिया बड़ा तंग कर रहा है। आप कहें तो भेज दूँ स्कूल इसको... वहाँ रहेगा तो दो-चार अक्षर जान जाएगा रमैनी सहुआइन ने घूरकर देखा और कहा "भेज दो.. मुझसे क्या पूछती हो?5

रमैनी सहुआइन के अत्याचार यहीं नहीं रुके वह अपने बेटे व बहू को भी अलग - अलग रखती थी।

" जमुना को बहुत दुख हुआ। उसकी समझ ही में न आया कि उसकी सास क्यों डंडा लेकर उसके पीछे पड़ी रहती है? किसुनराम (पति) इतने दिनों बाद आता हैं तो जमुना का दिल प्यार और उमंग से भरा रहता है। वह अपने पति के पास बैठकर सुख-दुख की बातें

करना चाहती है, परन्तु रमैनी सहुआइन कोई-न-कोई बखेड़ा खड़ा कर देती है। उसके इस तरह दबने का ही नतीजा है कि सास उससे इस तरह पेश आती है। इसीलिए कहा भी है कि इतना दबना ठीक नहीं।"6

'काले उजले दिन उपन्यास में एक पुत्र और उसकी विमाता की कथा है। इस उपन्यास में यह बताने का प्रयास किया गया है कि एक पुत्र की आवश्यकता आशा, अकांक्षाओं को केवल उसकी सगी माँ ही पूरी कर सकती है। एक विमाता के आने से पुत्र के संबंध घर के प्रत्येक सदस्य से खराब हो जाते हैं। वह पुत्र भी अपने अधूरे बचपन के साथ अपना पूरा जीवन एक खालीपन के साथ जीता है।

" मेरी माँ की मृत्यु के पश्चात पिताजी मेरे लिए नई माँ ले आए, उन्होंने मेरा बहुत ख्याल रखा और मैं उन्हीं को अपनी माँ समझने लगा | किन्तु यह सपना दो-तीन वर्ष बाद भंग हो गया। अपने खून से उत्पन्न लड़के पर ही माँ अपना सारा प्यार केन्द्रित करती और मुझसे घृणा करने लगीं। उसको खूब ढंग से खाना देतीं जबकि मैं भरपेट खाने के लिए तरसकर रह जाता। मुझे बहुत ही छोटी कटोरी में थोड़ा सा दूध रखकर मेरी ओर खिसका देतीं, मैं रोकर रह जाता। स्कूल से आने पर जब मैं खाने या पैसे के लिए जिद करता तो माँ मुझे डाँटती गाँलियाँ " देतीं। पिताजी ने भी मेरे प्रति कड़ाई का रुख अख्तियार करना शुरु कर दिया। मैं देर तक सिसकता रहता लेकिन मुझे मनाने वाला कोई नहीं था।" 7

सुन्नर पांडे की पतोह' उपन्यास के अन्तर्गत एक स्त्री के ससुराल के सभी लोगों के साथ संबंधों की कहानी है। सुन्नर पांडे की पतोह अपनी सास के अत्याचार से बेहद दुखी थी उसके पति ने माँ के व्यवहार से तंग आकर घर छोड़ दिया, सास की लापरवाही से दो सन्तानों को खोने के बाद भी वह अपने सास-ससुर की खूब सेवा करती परन्तु सास के व्यवहार,में कोई बदलाव नहीं आया ससुर व नन्दोई की गन्दी नजर से परेशान होकर वह एक दिन घर छोड़ देती है रास्ते में एक फौजी ने उसको रोक लिया और पूछा-

'' यहाँ कैसे घूम रही हो ? कौन हो तुम? मैं सुन्नर पांडे की पतोह हूँ -वह कई साल पहले घर छोड़ कर चले गए । फिर पता ही नही लगा उनका। दो बच्चे थे, मर गए। नैहर में भी कोई नहीं है " लोगों की बातें सुनकर जी ऊब गया, तो घर से निकली थी, कहीं' नदी-तालाब में डूबकर मरूँगी ।'' 8

इस प्रकार हम देखते हैं कि अमरकांत जी के उपन्यासों में विभिन्न वर्ग के परिवारों के कथानक को पाठकों तक पहुंचाया है। प्रत्येक उपन्यास में पारिवारिक समस्याएँ भिन्न-भिन्न हैं; प्रत्येक सदस्य के संबंध अन्य सदस्यों के साथ बिल्कुल भिन्न हैं जो कि समस्याओं का आधार है।

परिवार : विभिन्न सम्बन्ध

यूँ तो भारतीय परिवारों की एकता का आधार परिवार के सभी सदस्यों का आपस में संबंध है, परन्तु यही सम्बन्ध परिवार को जोड़ने व तोड़ने में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

'बीच की दीवार' उपन्यास में माँ वासन्ती देवी अपनी रुपवान पुत्री के साथ सम्बन्ध थोड़े अलगावादी थे

दीप्ति सुबह आठ बजे सोकर उठती। वह घर का कोई काम-काज नहीं करती थी और जो करती भी थी उसमें कोई गड़बड जरूर करती दिनभर सजती - संवरती, सारे कपड़े जहाँ-तहाँ फेंककर रफूचक्कर हो जाती। घर पर किसी के बीमार पड़ने पर उसके प्रोग्राम में कोई फर्क न पड़ता लेकिन जब उसके जुकाम हो जाता तो सारा घर सर पर उठा लेती। " अरे यह कोढ़िन जिस घर में जाएगी उस घर को चौपट कर देगी।" बासन्ती दीप्ति को उलाहना देते हुए ताना मारती है। बासन्ती का दिल कुढ़ने लगता। वह अपनी बेटी से ही एक अजीब किस्म की ईष्या करने लगी ! वह अपने पति के नीरस व्यवहार के उत्तर में लड़के को बेहद प्यार करने लगी और लड़की की उपेक्षा। वह दीप्ति को हमेशा कोसती, डाँटती डपटती पर दीप्ति अपने बाप के सहार हमेशा जीत जाती |" 9

'काले उजले दिन उपन्यास में नायक की पत्नी को उसकी सौतेली सास बेहद रुखा व्यवहार करती -

"शादी के कुछ ही दिनों बाद माता जी ने अपना रूप बदल दिया था। शादी होने तक वह अत्यधिक कोमल बनी रहीं, लेकिन अब उन्होंने अपना उग्र रुप दिखाना शुरु किया। कान्ति शुरु से ही काम - धाम करने में लगी रहती थी। वह चुपचाप सारे परिवार का भोजन बना देती। खाना बनाने के अलावा वह झाड़- बुहारु करती, कपड़े साफ करती। रात को खाना बनाने के बाद वह सभी बुज़ुर्ग स्त्रियों के बदन में तेल लगाती थी ।"10

इतना सब करने के पश्चात भी कान्ति को न इज्जत मिलती और न ही प्यार सिर्फ इसलिए कि उसका पति कमाता नहीं था और उसकी भी इज्जत नहीं होती वही सव कान्ति को भी झेलना पड़ा।

नायक ने भी जब मेहनत करके नौकरी प्राप्त की तो यह खुशखबरी अपने पिता के साथ बाँटनी चाही, परन्तु सौतेली माँ के साथ रहते-रहते पिता भी सौतेले पिता जैसा व्यावहार करते थे।

"पिताजी, मुझे नौकरी मिल गयी। मैंने उत्तेजित स्वर में कहा 'तो मैं क्या करूँ ? पिताजी ने मुँह बिगाड़कर कहा, जैसे कोई कड़वी चीज खाली हो, 'अंगेजी बाजा बजवाएँ ? यही तो तुम चाहते थे कि माँ-बाप से जल्दी-से-जल्दी दूर हट जाऊँ। बीवी को लेकर गुलछर्रे उड़ाऊँ। अब तुम्हारी छाती ठंडी हुई होगी। अब जाओ माता-पिता की बदनामी फैलाओ। बदनामी तो तुमने पहले ही फैला रखी है।"11

इस प्रकार हम देखते हैं कि जैसे एक बगीचे में भाँति - भाँति के पुष्प खिलते हैं जिनकी सुंगध तथा रंग अलग - अलग होता है वैसे ही परिवार भी अपने भिन्न-भिन्न संबंध भावनाओं से ओतप्रोत होते हुए भी एकता के सूत्र में बंधा रहता है। परिवार में कभी खुशी के पल, कभी कड़वे अनुभव भी प्राप्त होते हैं परन्तु प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व की आधारशिला उसका परिवार ही होता है।

अमरकांत जी के उपन्यासों में हमें विभिन्न प्रकार के परिवार और उनके सदस्यों के मध्य के विभिन्न संबंधों को जानने का अवसर प्राप्त हुआ, कुछ परिवारों में आवश्यकता से अधिक प्रेम दिखा, कुछ में कड़वे अनुभव ।

परिवारेतर संबंध

एक परिवार रक्त संबंधों पर आधारित होता है, परन्तु युवान होने पर कुछ सम्बन्ध परिवार के बाहर जाकर भी बनते है जैसे गुरु-शिष्य संबंध ,दोस्ती, आदर्श प्रेम ,आदि ऐसे सम्बन्ध है जो परिवारेतर संबंधों के अंतर्गत आते, हैं। यहाँ पर हम अमरकांत जी के उपन्यासों में परिवारेतर संबंधों पर प्रकाश डालेंगे और अमरकांत जी की दृष्टि से उन संबंधों को समझने का प्रयास करेंगें ।

'सूखा फ्ता' उपन्यास के नायक कृष्णकुमार यौवनावस्था में थे। यह वही अवस्था है जिसमें किसी भी व्यक्ति से प्रभावित होकर नवयुवक उसे अपना आदर्श मानकर उसी की भौति व्यवहार करने लगते हैं-

"मनमोहन मेरे नहीं, मेरे भाई के मित्र थे। मनमोहन में एक आश्चर्यजनक विरोधाभास था, साथ ही गुणों व अवगुणों का अद्भुत समन्वय था। वे छात्रों और नवयुवकों को मर्दानगी, बहादुरी का पाठ पढ़ाते जिससे युवक समाज उनका पदानुसरण करने को आतुर हो उठता था वे पढ़ने-लिखने में बहुत तेज थे, खेलने-कूदने में भी पीछे, नहीं थे उनकी मारपीट अक्सर ऐसे युवकों होती जो कमजोर जनता को परेशान करते। नवयुवकों पर उनका असर जबर्दस्त था। लड़के उनकी तरह ही बात करते, उन्हीं की तरह चलते। संक्षेप में न वह देहाती थे और न शहरी । मैं उनके व्यक्तित्व से बेहद प्रभावित था और उनका आदर करता था।"12

"आकाशपक्षी' उपन्यास एक राजकुमारी हेमा की कहानी को बयाँ करती है। हेमा का परिवार राज- परिवार था, जो आजादी के पश्चात दुर्दशायुक्त जीवन को मजबूर थे। अपने खर्चों तथा शान के साथ जीना उनकी आदत थी, जिसकी क्षतिपूर्ति उनकी पुत्री हेमा को करनी पड़ी। हेमा किशोरावस्था की दहलीज़ पर थी जब पूरा परिवार अपना महल छोड़कर लखनऊ की अतिथिशाला में आम जनों के बीच बस जाता है जहाँ उसकी मुलाकात रवि नामक नवयुवक से हुई -

मुझे रवि की एक - एक बात बिल्कुल सही लगती और मैं उनको अपने दिल में उतार लेती। रवि के कहने अनुसार खूब मेंहनत कर के अपने जीवन को ऊँचा उठाना चाहती थी। धीरे-धीरे रवि के लिए मेरे मन में जो प्यार था, वह गहरी जड़े जमाने लगा। उसकी याद सदा मेरे मन में फूलों की तरह बिछी रहती। वह मेरे जीवन के लिए आवश्यक वस्तु हो गया। जब मैं सोती तो उसी की याद को लेकर सोती और जागती तो सबसे पहले उसी की याद आती।" 13

"ग्रामसेविका " उपन्यास में ग्रामसेविका की भूमिका में दमयन्ती पूरी मेहनत और लगन के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रही थी। उसी गाँव में अन्धविश्वासों में जकड़ी एक बुर्जुग स्त्री रमैनी सहुआइन अपनी बहू जमुना को बेहद बंदिशों में रखती, एक दिन जमुना की नवजात को बुखार आया और कई दिन तक न उतरा तब उसने दमयन्ती को बुलावा भेजा -

"अरे बहिन जी इसको किसी तरह बचा लो।" उसको देखते ही जमुना ने उसके पैर पकड़ लिए । " घबराइए मत बहिन । सब ठीक हो जाएगा।" और दमयन्ती ने खिड़की का दरवाजा खोल दिया। सिरहाने से आग हटा दी। बच्ची के शरीर पर जो मोटा कपड़ा लिपटा था, उसको हटाकर एक हल्का कपड़ा ऊढ़ा दिया और ठंडे पानी की पट्टी माथे पर रखने लगी। कुछ समय बाद दमयन्ती का भाई दवा लेकर लौटा, बच्ची को दवाई दी गई और घर की तथा सौरगृह की दमयन्ती ने अच्छे से सफाई कर दी। शाम तक बच्ची का बुखार भी बिल्कुल हल्का पड़ गया, तब जमुना ने उसके हाथ जोड़कर कहा कि "तुम्हारा उपकार कभी नहीं भूलूँगी" जमुना मन-ही- मन बहुत कृतज्ञ हो गई। दमयन्ती ने कहा- "इसमें उपकार की बात नहीं बहिन । मैं तो तुम्हारी छोटी बहिन हूँ ।" 14

' बीच की दीवार' उपन्यास में 'दीप्ति' एक लाड़-प्यार से पाली गई कन्या की कहानी है। अपने यौवनावस्था की दहलीज़ पर पहुंच कर दीप्ति अपने भाई शंकर के दोस्तों से काफी मेल-जोल रखने लगी । सुन्दरता के कारण शंकर के दोस्त भी दीप्ति को आकर्षित करने में लगे रहते ।

" अब दीप्ति के मन में सदा अशोक बना रहता। जब अशोक आता तो वह

उसकी ओर मुस्कुराकर देखती, चाय का कप सबसे पहले उसी की ओर बढ़ाती हमेशा अशोक का समर्थन करती।

पढ़ते वक्त कापियों पर 'अशोक - अशोक' लिखने लगती, दीप्ति अब सदा अशोक के सपनों में खोई रहती ।" 15

संबंधों में बदलाव एवं बिखराव

किसी भी परिवार के सभी सदस्यों के मध्य संबंधों को जुड़ाव मोह से होता है। जब तक मोह की पूर्ति होती है संबंधों में निकटता रहती है परन्तु जैसे ही किसी संबंध से ज्यादा उम्मीद लगाई जाती हैं, उनकी पूर्ति न होने पर संबंधों में बदलाव एवं बिखराव की स्थिति उत्पन्न होने लगती है।

'आकाशपक्षी' उपन्यास में अमरकांत जी ने एक राजसी परिवार की सांमतवादी स्थिति को दर्शाया है। परिवार की राजकुमारी हेमा यहाँ मुख्य पात्र है। स्वतंत्रता पूर्व तक राज-परिवार अपने पूरे शान-ओ-शौकत से जीवन व्यतीत कर रहा था, परन्तु स्वतंत्रता पश्चात् अब सभी नागरिक समान थे। हेमा के ताऊ जी 'राजा साहब' थे और उनके पिता 'बड़े साहब' जब सभी को एक दिन रियासत छोड़कर आम जीवन जीने को मजबूर होना पड़ा तब संबंधों में बिखराव साफ झलक रहा था। राजा साहब के जाने के पश्चात हेमा की माँ ने बड़े साहब से पूछा-

"क्या हुआ ?" माँ ने उत्सुकतावश पूछा था। "उन्होंने सिर्फ दस हजार रुपये दिए...।"

" सिर्फ दस हजार ? कई लाख रुपये मिले हैं... उसमें से क्या इतना ही " माँ की आँखे क्रोध एवं आश्चर्य से बाहर निकल आई थीं।

तुम और क्या चाहती हो ?" "वाह रे ! क्या हम लोग आसमान से टपककर आए हैं? हमारे भी कोई बाप-दादा थे? हमारा भी वहाँ की जमीन में कोई हक था ? राजा की गद्दी इसलिए थोड़े ही मिली थीं कि हम लोगों को घूरे पर फेंक दें? आपने ही कहा होगा कि मेरे लिए दस हजार काफी हैं। नहीं तो अगर आप अड़ जाते तो वह देकर जाते।" माँ तीखे स्वर में बोल रही थीं। पिता जी ने कहा- "चुप रहो, उन्होंने कहा है कि दिल्ली जाकर और रुपये भेजेंगे।"16

यहीं से राजा साहब और बड़े सरकार के परिवार अलग हो गए, अब बड़े सरकार की माली हालत दिन-ब-दिन खराब होती गई। पूरे परिवार को इस स्थिति से बाहर निकालने के लिए उन्होंने एक उम्रदराज कुँअर साहब, जो एक रियासत के मालिक रह चुके थे के साथ हेमा का रिश्ता कर दिया और उसके बदले पूरे परिवार की आर्थिक स्थिति को संभाल लिया ।

" सुन्नर पांडे की पतोह " उपन्यास में सुन्नर पांडे की दूसरी पत्नी अतिराजी के जुल्मों की दास्तां है पहली पत्नी से उत्पन्न पुत्र लल्लन के साथ बहुत गलत किया- "अतिराजी ने ऐसा तला- भुना कि वह घर से भागकर डाकू बन गया। बनियो और बबुआनों के यहाँ डकैती, गाय-बैलों और घोड़ों को चुराकर इधर-उधर बेच देना यही अब उसका धन्धा था।"17

अतिराजी ने स्वयं के पुत्र झुल्लन को पूरी तरह से बिगाड़ दिया। झुल्लन बेहद दब्बू, अव्यावहारिक और पलायन वादी व्यक्तित्व का स्वामी बना दिया। झुल्लन के राजलक्ष्मी के साथ विवाह के बाद भी वह दोनों को पास न आने देती।

" गौना के बाद जब राजलक्ष्मी ससुराल आई तो झुल्लन पांडे बेहद खुश थे। पर अतिराजी अपनी बहू से बेहद जलती थीं। उसने उन दोनों को कभी मिलने ही नहीं दिया और बहूं को डाँटती -" मिलने के लिए बहुत बेचैन हो । हथिनी की तरह देह लेकर आई हो, हमारा लड़का तो फूल की तरह कोमल है... खबरदार कि उधर मुँह किया। दो साल तक मिलना-जुलना बन्द । चुपचाप हमारी बगल में सोया करो....।"18

इस प्रकार हम देखते हैं कि किसी भी रिश्ते में एक सीमा तक ही दखल हो सकता है जरूरत से ज्यादा दखलंदाजी कभी-कभी रिश्ते ही खराब नहीं करती वरन् इंसान को तोड़ देती है। तब संबंधों में बदलाव और बिखराव आम बात होती है।

निष्कर्ष

अमरकांत जी ने अपनी लेखनी से समाज के प्रत्येक वर्ग स्थिति का सत्यबोध कराया है। आपने समाज के मध्यवर्ग में परिवार की समस्याएँ तथा विशेषता दोनों पर प्रकाश डाला है परिवार के प्रत्येक सदस्य चाहे वह नवयुवक हो, बुजुर्ग हो या स्त्री सभी की भावनाएँ, विचार तथा स्थिति को स्पष्ट किया है। विवाह एक सामाजिक संस्था है, उसमें उत्पन्न विविध समस्याओं को आपने अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। नारी की स्थिति को जितनी गहनता से आपने स्पष्ट किया है वैसा कोई अन्य रचनाकार नहीं कर पाया है। वह चाहे विधवा स्त्री हो, परित्यक्ता या फिर अविवाहित स्त्री ही क्यूँ न हो। ग्रामीण जीवन का उल्लेख आपने इतनी सत्यता के साथ किया है कि वह सारी समस्याएँ पाठक स्वयं अनुभव करने लगते हैं। परिवार में समय के साथ आए मूल्यों के विघटन तथा परिवर्तन को भी आपने अपने उपन्यासों द्वारा एक अहम समस्या की तरह उजागर किया। अमरकांत जी के उपन्यासों के द्वारा हमें समाज में व्याप्त रुढ़ियों, कुरीतियों तथा समस्याओं को देखने का एक नया नज़रिया प्राप्त हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचि

1 'काले उजले दिन' अमरकांत, पृ.क्र. 9, प्रकाशक- राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण - 2014

2 'बीच की दीवार' अमरकांत, पृ.क्र -6-7, प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण - 2008

3. 'सुन्नर पांडे की पतोह' अमरकांत, पृ.क्र -58 ,प्रकाशक राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली,संस्करण - 2019

4. 'सुन्नर पांडे की पतोह' अमरकांत ,पृ.क्र -49 ,प्रकाशक राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली ,संस्करण - 2019

5 'ग्राम सेविका', अमरकांत, पृ.क्र -.32 ,प्रकाशक- राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2008

6 'ग्राम सेविका', अमरकांत, पृ.क्र -.44 ,प्रकाशक -राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2008

7 'काले उजले दिन' अमरकांत, पृ.क्र -9-10 ,प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली, संस्करण - 2014

8 'सुन्नर पांडे की पतोह' अमरकांत ,पृ.क्र -59 , प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली, संस्करण - 2019

9 'बीच की दीवार',अमरकांत ,पृ.क्र -8 , प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली, संस्करण - 2008

10 'काले उजले दिन', अमरकांत, पृ.क्र -31 ,प्रकाशक -राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली, संस्करण - 2014

11 'काले उजले दिन', अमरकांत ,पृ.क्र -45 ,प्रकाशक- राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली, संस्करण - 2003

12 'सूखा पत्ता',अमरकांत ,पृ.क्र -13-14-16 ,प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली, संस्करण - 2021

13 'आकाशपक्षी',अमरकांत ,पृ.क्र -93 ,प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली, संस्करण - 2021

14 'ग्राम सेविका',अमरकांत ,पृ.क्र -28-29 ,प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली, संस्करण - 2008

15 'बीच की दीवार',अमरकांत, पृ.क्र -10 - 11 ,प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली, संस्करण - 2008

16.'आकाशपक्षी',अमरकांत, पृ.क्र -15 ,प्रकाशक- राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली, संस्करण - 2021

17. 'सुन्नर पांडे की पतोह' अमरकांत, पृ.क्र. 51, प्रकाशक- राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण - 2019

18. 'सुन्नर पांडे की पतोह' अमरकांत, पृ.क्र -54, प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली, संस्करण - 2019